मालवा से आये वैनगंगा क्षेत्र में बसे पंवार(पोवार) क्षत्रियों का इतिहास

मालवा से नगरधन होकर वैनगंगा क्षेत्र में बसे पंवारों का गौरवशाली लेकिन संघर्षों से भरा इतिहास रहा है। ग्यारहवी से तेरहवीं सदी तक मध्य भारत पर मालवा के पंवार राजाओं का शासन था लेकिन मालवा पर इनकी सत्ता खोने के बाद मध्यभारत में पंवारों का कोई और विशेष इतिहास नही मिलता। यह समय पंवारों का संघर्ष भरा समय था और वे समय समय पर भारतीय राजाओं का सहयोग करते रहे। मराठा काल और ब्रिटिश काल में लिखी किताबें, जनगणना दस्तावेज, जिला गैज़ेट और शासकीय रिपोर्ट्स में वर्तमान में वैनगंगा क्षेत्र में बसे पोवारों का व्यापक इतिहास मिलता है और इसमें कहा गया है कि इनका आगमन स्थानीय राजाओं के मुगलों के विरुद्ध संघर्ष हेतु सहयोग मांगने पर आगमन हुआ। इन शासकों ने पंवारों की वीरता को देखते हुए इन क्षेत्रों में स्थायी रूप से बसने के लिए प्रेरित किया।

वैनगंगा क्षेत्र में पोवारों की बसाहट :

Central Provinces' Census, १८७२, के अनुसार वैनगंगा क्षेत्र के पोवार(पंवार) मुलत: मालवा के प्रमार(Pramars) है जो सर्वप्रथम नगरधन, जो की जिला नागपुर के रामटेक के पास है, आकर बसे थे। सन १८७२ की इस रिपोर्ट में कहा गया है की इन क्षेत्रों में पोवारों का मालवा से आगमन इस जनगणना के लगभग सौ वर्ष पूर्व हुआ है। इसका अर्थ यह है की १७७० के आसपास वैनगंगा क्षेत्र में पोवार बस चुके थे। भाटों की पोथियों में मालवा राजपुताना से परमार क्षत्रियों के नगरधन आकर, वैनगंगा क्षेत्र में विस्तारित होने का उल्लेख मिलता है। नगरधन, विदर्भ का सबसे पुराना ऐतिहासिक नगर है और ग्यारहवीं शदी के अंत में भी इन क्षेत्रों पर मालवा के प्रमार वंश का शासन था। ११०४ में मालवा नरेश उदियादित्य के पुत्र लक्ष्मण देव ने नगरधन आकर विदर्भ का शासन संभाला था। नागपुर प्रशस्ति और सेंट्रल प्रोविएन्सेस गैज़ेट १८७० में इसका उल्लेख मिलता है। १८७२ की जनगणना रिपोर्ट में लिखा है की पोवारों के द्वारा नगरधन में किले का निर्माण किया। चूँकि यह पहले से ही विदर्भ के विभिन्न राजवंशो की राजधानी रही

है इसलिए उसी जगह पर पोवारों के द्वारा नगरधन में किले का निर्माण किया गया।

मराठा काल में भी नगरधन, महत्वपूर्ण सैनिक केंद्र था और सेना में पोवारों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। नगरधन और आसपास के क्षेत्रों में पोवारों ने अनेक बस्तियां बसाई थी। भाटो की पोथियों में भी नगरधन और नागपुर में तीन पीढ़ियों के बसने की जानकारी मिलती हैं। उज्जैन से आये श्री दिगपालसिंह बिसेन सर्वप्रथम नगरधन आये थे। पोथी में ७१३ शब्द लिखा हैं और सम्भवतया यह १७१३ होगा जब उनका परिवार नगरधन आया होगा। उनके पुत्र श्री सिराज और लक्ष्मणदेव बिसेन के नागपुर में बसने का उल्लेख पोथी में दिया हैं। इसी प्रकार पोवारों के अन्य कुलों का मालवा राजपुताना के विभिन्न क्षेत्रों से नगरधन आकर वैनगंगा क्षेत्र की ओर विस्तार का विवरण हमारे भाट स्व. श्री बाबूलाल जी की पोथी में उल्लेख हैं। १८७२ की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार नगरधन से समय के साथ पंवार, वैनगंगा के पूर्व में आम्बागढ़ और चांदपुर की ओर विस्तारित हुए। कुछ पोवारों ने कटक पर मराठों के विजय अभियान में श्री चिमाजी भोसले का साथ दिया था। कटक अभियान में पोवारों के सौर्य और पराक्रम के कारण पुरस्कार स्वरूप उन्हें लांजी और बालाघाट जिलें में वैनगंगा के पश्चिम में बहुत सी भूमि उन्हें प्रदान की गयी। सिवनी जिलें में पंवार सर्वप्रथम सांगड़ी और प्रतापगढ़ में आये। इसके बाद उनका विस्तार बालाघाट जिलें में कटंगी की ओर हुआ। इस जनगणना रिपोर्ट में उन्हें बहुत ही उधमी जाति और उन्नत कृषक कहा गया है। इस जनगणना में भंडारा में ४५,४०४, सिवनी में ३०,३०५ और बालाघाट जिलें में १३,९०६ पोवारों की जनसँख्या बताई गयी है।

Imperial Gazetteer of India (1907) और Balaghat District Gazetteer (1907) में भी बालाघाट जिले में पोवारों की जनसँख्या और बसाहट का उल्लेख मिलता है। ब्रिटिश भारत में कृषि के साथ गाँवो की शासन व्यवस्था में पोवारों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। Thomson, "Report," pp. 134-34, pars. 63-68, and C. P. Gazetteer (1870), p. २३ में इस बात का उल्लेख मिलता है की मराठा अधिकारी श्री लक्ष्मण नाइक ने सन १८२० में सतपुड़ा की घाटियों में

सड़को का विकास किया और मालवा से आये इन पोवारों को बसने में मदद की। १८६७ में बालाघाट जिले का गठन हुआ था और मराठा काल में वैनगंगा क्षेत्र में प्रशासन, सुरक्षा और कृषि कार्य का अच्छा अनुभव होने के कारण ब्रिटिश प्रशासन ने पोवार समाज को नवनिर्मित बालाघाट जिले के स्थानीय प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की।

Bloomfield, "Progress," p. 99, par. 56 में ब्रटिश अधिकारी कर्नल ब्लूमफील्ड ने इस बात का उल्लेख किया है की पोवार सबसे विश्वशनीय और सफल जाती है इसीलिये उन्होंने सुदूर क्षेत्रों में बस्तियों के विकास के लिए पोवारों को प्रोत्साहित किया था। पोवारों को अनेक गावों की जमींदारी दी गयी। बुलंद बख्त और मराठा काल वैनगंगा घाटी के भंडारा सिवनी जिलों अनेक गावों की जागीरदारी/जमींदारी पोवारों को दी गयी थी और उनके वंशजो को बालाघाट जिले की नवनिर्मित बस्तियों की जमींदारी दी गयी साथ ही उन बस्तियों में अन्य पोवार पंवार परिवारों को बसने के लिए प्रोत्साहित किया गया। बालाघाट जिले के तात्कालिक उपायुक्त कर्नल ब्लूमफील्ड ने 1870 के आसपास पंवार राजपूतों को बैहर क्षेत्र में बसने के लिए प्रेरित किया और सर्वप्रथम श्री लक्ष्मण पंवार परसवाड़ा क्षेत्र में बसे. इसक बाद बैहर क्षेत्र में पंवारो को कई गाँवो की पटेली/ मुक्कदमी/ जमींदारी दी गयी जो कृषि प्रधान ग्राम थे। बैहर पंवारो की तीर्थस्थली है और आसपास के बहुत से पंवारो ने बैहर को अपना मूल निवास बना लिया हैं। 25 जनवरी 1910 को सिहारपाठ बैहर, जिला-बालाघाट में श्री गोपाल पटेल ने पंवार समाज की बैठक बुलाई थी जहां इस पहाड़ी पर समाज के द्वारा राममंदिर बनाने का निश्चय किया गया और इस पँवार संघ के नेतृत्व में 1913 में सिहारपाठ पहाड़ी, बैहर पर राममंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ।

वैनगंगा क्षेत्र में बसे पंवार(पोवार) समाज के कुल(कुर):

आर वी रसेल ने अपनी किताब The Tribes and Castes of the Central Provinces of India(1916) में नागपुर पंवार (वैनगंगा क्षेत्र के पोवार) को पंवार राजपूत की एक शाखा माना है। उन्होंने वैनगंगा क्षेत्र में बसने वालों

पंवारों के इतिहास, संस्कृति, कुल, भाषा इत्यादि पर अपनी इस किताब में विस्तृत विवरण लिखा है। मालवा राजपुताना से अठाहरवीं सदी के आरम्भ में आये छत्तीस क्षत्रियों में से बालाघाट, भंडारा, सिवनी और गोंदिया जिलों में तीस कुल ही स्थायी रूप बसें और बाकी के छह कुल संभवतया युध्द के बाद वापस चले गए हों। पोवारों में उनके कुलों का बहुत महत्व होता है और इनके विवाह पोवारों के अपने कुलों अम्बुले, कटरे, कोल्हे, गौतम, चौहान, चौधरी, जैतवार, ठाकुर/ठाकरे, टेम्भरे, तुरकर/तुरुक, पटले, परिहार, पारधी, पुण्ड/पुंडे, बघेले/बघेल, बिसेन, बोपचे, भगत, भैरम, एडे, भोयर, राणा, राहांगडाले, रिणायत, शरणागत, सहारे, सोनवाने, हनवत/हनवते, हरिनखेड़े और क्षीरसागर में ही होते हैं।

इस किताब के पृष्ठ क्रमांक ३४० पर लिखा है कि इस समय इस समाज की जनसंख्या १,५०,०००/ के लगभग रही होगी। पंवारों की कोई उपजाति नही है लेकिन छत्तीस अंत:विवाही कुल है और ये अपने इन कुलों के बाहर विवाह नही करते। इसके अतिरिक्त कई समाजजनों और संस्थाओं के लेख में इन पंवारो के छत्तीस कुल होने का उल्लेख करते हैं। आज समाज के वरिष्ठजनों के द्वारा वैनगंगा क्षेत्र के पंवारों के छत्तीस कुल होने की बात करते हैं। सदियों से इनकी सभी पुरातन परंपराएं इनके अपने कुलों पर निर्भर करती हैं। कुल को कुर भी कहा गया है। नागपुर पंवारों को पोवार भी कहा जाता है और इनकी बोली को पोवारी या पंवारी कहते है जो सिर्फ वैनगंगा क्षेत्र के पोवारों की मातृभाषा है।

पंवार(पोवार) समाज के ऐतिहासिक नाम :

शदियों से हमारा समाज, पोवार और पंवार नाम से ही जाना जाता है और इतिहास लिखने वाले भाटों ने इन्हे मालवा के प्रमार भी कहा है। आज से १५० वर्ष पुराने जिला गैज़ेट में इनके मालवा से आगमन और नगरधन - वैनगंगा क्षेत्र में बसाहट का उल्लेख है। इन्ही गैज़ेट में और पुरातन किताब में इनके ३६ क्षत्रिय कुलों का संघ होना बताया है। इन्ही ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर कुछ वादों में अदालतों ने हम वैनगंगा क्षेत्र के पोवारों के इतिहास का भी उल्लेख किया है। एक ऐसे ही वाद नाथूलाल सालिकराम व् रंगोबा नरबद में मध्यप्रदेश उच्च

न्यायलय (२६ अक्टूबर १९५१) ने वैनगंगा क्षेत्र के पंवारों के इतहास पर चर्चा की। इसमें माननीय न्यायलय ने इन्हे क्षत्रिय माना। बालाघाट जिले की वारासिवनी तहसील के इस वाद में कोर्ट ने Panwar और Powar शब्द का प्रयोग किया। इस आदेश में शेरिंग के किताब हिन्दू ट्राइब्स एंड कास्टस में उल्लेखित तथ्य की पोवार, औरंगजेब के समय मालवा से आकर वैनगंगा ज़िले के तिरोड़ा, कामठा, लांजी और रामपायली परगना में बसे थे को आदेश में लिया गया। आगे लिखा है की पोंवार, राजपूत जाति के हैं जो बालाघाट, भंडारा और सिवनी में मुलत: बसे थे और और अन्य जिलों में बहुत कम। पोवार, सर्वप्रथम मालवा से रामटेक के पास नगरधन आये थे। वहां से आम्बागढ़ और चांदपुर की ओर बढ़े थे। आदेश में लिखा गया की की पोवार, राजपूत हैं। इस आदेश में रसेल द्वारा उल्लेखित तथ्य की पंवार या परमार, प्राचीन और प्रसिद्ध राजपूत वंश हैं, को स्वीकार किया हैं। इस आदेश में अदालत ने माना की बालाघाट ज़िले के पोवार, क्षत्रिय हैं और इसमें मालवा से आये इन परमार वंशियो के लिए लिए पंवार और पोवार शब्दों का ही प्रयोग किया गया हैं।

पंवारों की बोली और पोवारी संस्कृति :

इन छत्तीस कुर वाले पंवारों की बोली का नाम पोवारी है और यह सिर्फ इसी समाज के द्वारा ही बोली जाती हैं। क्षत्रिय पोवार समाज अपनी सनातनी पोवारी संस्कृति के साथ सभी समाजों से एकीकृत होकर देश की एकता और अखंडता के लिए सदैव कार्य कर रहा हैं साथ में अपनी ऐतिहासिक और मूल संस्कृति का संरक्षण कर अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण हेतु भी कार्य कर रहा हैं।

वैनगंगा क्षेत्र में बसने के बाद इन क्षत्रियों ने कृषि कार्य को अपना मूल व्यवसाय बना लिया और गांवों में स्थायी रूप से बस गए। गांव में ही हमारी ऐतिहासिक सनातनी पोवारी संस्कृति के दर्शन होते हैं। पोवारी के छोटे-छोटे रीति-रिवाज सभी के हृदय को भाते हैं और हर कोई समय मिलते ही अपने मूल गांव को जाना चाहते हैं। छत्तीस कुल के समाज में अपने कुरों का बड़ा महत्व होता है। तुम्ही

कोन कुरया आव रे भाऊ करके परिचय पूछा जाता है। हर कुर का अपना महत्व और इतिहास है। छठि, बारसा, करसा भरना, हल्दी, अहेर, दसरे में महरी बड़ी का दस्तूर, देव उतारने से लेकर हर नेंग-दस्तूर में पोवारी के कुलों का बड़ा महत्व होता है और यह विरासत आने वाली पीढ़ी तक मूल रूप में पंहुचनी ही चाहिए। देवघर की चौरी हर पोवार की आस्था का केंद्र होती है तो शस्त्र पूजा हमारे पँवारी वैभव को दर्शाता है। आमी छत्तीस कुर को पोवार आजन, असो नहानपन लका सुन रही सेजन। हमारे हर रीति-रिवाज का एक वैज्ञानिक आधार है और यह पुरखों की विरासत हजारों वर्षों की है अब जरूरत इस विरासत को मूल रूप में सहेजे, संजोये और भविष्य की पीढ़ियों को हस्तांतरित करें। पोवारी बोली और पोवारी संस्कृति ही छत्तीस कुल के पंवारों की अपनी पहचान हैं जिसे आगे सहेज कर रखना हर पोवार की जिम्मेदारी हैं।

****

क्षत्रिय पंवार(पोवार) समाज में सामाजिक पुनर्जागरण

(१७०० से १९४७ तक का कालक्रम)

ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार मालवा राजपुताना से आकर वैनगंगा क्षेत्र में क्षत्रिय पंवार(पोवार) समाज, की स्थाई बसाहट सन १७७५ के आसपास तक हो चुकी थी और इस समय तक उन्होंने छत्तीस कुल पंवार संघ के रूप में संगठित होकर समाज को एकीकृत किया। ये लोग मध्यभारत में स्थानीय शासकों के सैन्य तथा राजकीय मदद के लिए, उनके आव्हान पर आये थे। इन्होंने अपने सभी सैन्य अभियान में विजय प्राप्त की और उसके बदले इन्हे वैनगंगा के आसपास के क्षेत्र प्राप्त हुये, जहाँ इनकी स्थाई बसाहट हुई।

छत्तीस कुल पंवार संघ, ही क्षत्रिय पंवार(पोवार) समाज की सर्वोच्च संस्था थी। समाज में सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देकर सैक्षणिक स्तर में सुधार के साथ महिलाओं में शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिये पंवार संघ के द्वारा ही १९०० के आसपास, "पंवार जाति सुधारिणी सभा" का गठन किया गया था। इस संस्था के द्वारा पोवारों के लिए ऐतिहासिक पुनर्जागरण का कार्य किया। इसी संस्था ने समाज में मांस-मदिरा के सेवन पर प्रतिबन्ध की व्यवस्था की थी। दहेज़ प्रथा के हर रूप में सुधार हेतु विधान बनाये थे।

सनातनी धर्म संस्कृति से जोड़े रखने के लिए, समाज को अपने आराध्य प्रभु श्रीराम से जोड़कर, स्वजातीय चेतना के विस्तार के लिए, बैहर नगर के सिहारपाठ पहाड़ी पर श्रीराम मंदिर के निर्माण के लिए, "पंवार राम मंदिर समिति" का गठन किया गया। "पंवार राम मंदिर समिति" के नेतृत्व में सभी समाजजनो सामूहिक प्रयासों से सन १९११ में बैहर में राम मंदिर निर्माण का कार्य पूरा हुआ। "पंवार राम मंदिर समिति" ही बाद में 'पंवार राम मंदिर ट्रष्ट" के रूप में पंजीयकृत होकर सिहारपाठ पहाड़ी पर, राममंदिर तीर्थ परिसर की देखभाल और रखरखाव का कार्य करता है। इस ट्रस्ट की कई अनुषंगी सर्किल समितियाँ है जो समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान के साथ स्वजातीय भाई-बहनों को जोड़ने का कार्य करती है। यह संस्था राममंदिर परिसर में प्रतिवर्ष रामनवमी के पावन

अवसर पर मेले का आयोजन करती है जिसमें देश-दुनियाँ में फैले स्वजातीय भाई-बहन आकर, अपने आराध्य प्रभु श्रीराम की पूजा अर्चना के साथ अपने स्वजातीय भाई-बहनों से मिलने के अवसर का लाभ लेते हैं। यह संस्था समाज की एक पुरातन और सबसे सम्मानीय संस्था हैं। इस संस्था के द्वारा प्रतिवर्ष, रामनवमी के पावन अवसर पर "पंवार दर्पण" नाम से एक सामाजिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

१९१० से १९४१ तक छत्तीस कुल पंवार संघ की अलग-अलग जगहों पर निरंतर बैठके होती रही। इसी बीच समाज में धीरे-धीरे अनेक संगठन बनने लगें थे और समाज भी देश की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष में तन-मन-धन से जुटा रहा। समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये पंवार संघ के द्वारा सन १९२७ में "पंवार शिक्षा समिती" का भी गठन किया गया था। इस समिती के द्वारा शिक्षा के प्रसार-प्रसार के साथ महिलाओं की आधुनिक शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिये विशेष प्रयास किये गये।

इस समय सभी पोवार बहुल क्षेत्र केंद्रीय प्रान्त में आते थे और नागपुर इसकी राजधानी थी। नागपुर में समाज के युवाओं को जोड़ने के लिये सन १९३१ में, "नूतन पंवार संघ" की स्थापना हुई। इस संघ द्वारा समाज के छात्रों को जोड़कर उन्हें समाजोत्थान के लिये कार्य किया गया। नूतन पंवार संघ ने एक सामाजिक पत्रिका भी निकालना शुरू किया था जो पोवार समाज की प्रथम सामाजिक पत्रिका थी। सन १९४१ में "मध्यप्रदेश एवं बेरार क्षत्रिय पंवार संघ" नाम से पंवार संघ को पुनर्गठित किया गया ताकी सभी क्षेत्रों में समाज को सांस्कृतिक रूप से संगठित रखा जा सके। इस संस्था ने "पंवार जाति सुधारणी सभा" के कार्य अपने हाथ में ले लिये और समाज की संस्कृति को संरक्षित कर ३६ कुल पोवार समाज के समाजोत्थान हेतु अनेक अधिवेशन लेकर समाज को संघठित कर उन्नति के मार्ग पर ले जाने के अनेक उल्लेखनीय कार्य किये गये।

सन १७०० से लेकर देश की स्वतंत्रता तक लगभग २५० वर्षों तक छत्तीस कुल पंवारों के संघ ने मालवा के राजपूतों की पहचान और अस्मिता के प्राचीन

छत्तीस कुलीन स्वरूप को कायम रखा और आजादी के बाद भी सामाजिक पुनर्जागरण कार्यक्रम देश की प्रगति के साथ आज भी निरंतर जारी हैं।

****

चौरी की माटी(ऐतिहासिक कहानी)

देवगढ़ को राजा ला क्रूर औरंगजेब को विरूद्ध युद्ध करखन आपरो राज्य ला मुक्त करन लाई वीर योद्धा इनकी पक्की सेना की जरत होती। तसच वोला आपरी राजधानी ला पहाड़ रान लकऽ येक मैदान मा लेय जायकर येक नवो, ताकतवर अना सुन्दर राज्य बनावन लाई सैन्य को संगमा राजकीय सहयोग की जरत होती। वू राजा ला राजपूत इनकी वीरता को भान होतो। येको साती वोना मालवा राजपूताना को दौरा करखन उतन का क्षत्रिय योद्धा इनला मदद की गुहार करीन। तसच ओना राजपूत राजा छत्रसाल बुंदेला लकऽ भी मदद को आव्हान करीन। छत्रसाल ला भी उनको राजपुताना का नातेदार राजपूत वीर इनना मुगल लकऽ उनको राज्य ला मुक्त करन लाई सहयोग करी होतिन। या बात राजा शाह ला पता होतो।

विदर्भ राज्य की जूनी राजधानी रामटेक को जवर नगरधन होती। यव प्राचीन नगर ओन बेरा मा भी मुख्य सैन्य राजधानी होती। राजा बुलंद शाह ना नगरधन को जवर नाग नदी को बाजु मा आपरी येक नवी राजधानी को निरमान करीन जेको नाव नागपुर राखनमा आयो।

राजा बुलंद शाह ना मालवा राजपुताना को सैन्य दल ला यन क्षेत्र मा आयखन उनला सैन्य अनऽ प्रशासन का कई महत्वपुर्ण पद देइन। उनकी स्थाई रूप लकऽ बसाहट ला प्रोत्साहित करन ला यन क्षेत्र मा जाघा-ज़मीन देन को प्रस्ताव भयो। नगरधन(रामटेक) मा राजपूत अनऽ दुसरो कई योद्धा इनको संग येक मोठी सेना को गठन भयो जेना आपरी वीरता लकऽ यन क्षेत्र ले मुग़ल सेना ला हरायकन बाहिर खदेड देइन। मराठा सरदार इनको भी इनला संग भेटयों होतो जेको लक मराठा अना राजपूत को संग स्थानीय गोंड राजा इनको साथ लकऽ दिल्ली को मुग़ल राजा को शासन इतन लकऽ खतम भयो अनऽ सनातनी शासन की स्थापना भई। नागपुर, विदर्भ अन ऽ देवगढ़ राज्य की नवी राजधानी बनी तसच नगरधन(रामटेक) मुख्य सैन्य राजधानी। राजा ना राजपूत सेना ला यनऽ क्षेत्र मा आपरो परिवार ला इतन आनखन स्थाई रूप बसन को आव्हान करीन।

मालवा राजपुताना की सुदूर आपरी मातृभूमि अनऽ देव-धामी ला सोड़कन नवो क्षेत्र मा बसनो येक दुःखद अनुभव होतो। परऽ यव क्षेत्र आता उतन लकऽ ज्यादा साजरो होतो अना इतन उनला सैन्य अना राजकरण को दायित्व भी होतो त आपरी रोजी-रोटी को खातिर उनना इतनच आयखन बसन को फैसला करीन। हर मानुष ला आपरी माटी को मोह रवहसे त येको समाधान लाई उनना आपरो क्षेत्र की माटी ला धरखन इतन आनीन। यन पावन माटी ला आनखन आपरो देवघर की चौरी मा स्थापित कर देइन।

मालवा राजपूताना का छत्तीस कुर क्षत्रिय इनको सैन्य दल ना यन क्षेत्र मा भोसला मराठा राज्य को विस्तार मा भी मुख्य भूमिका निभाइन। मराठा सेना अना राजपूत सेना को संगमा रवहन को कारन इनकी आपरी विशिष्ट भाषा संस्कृति विकसित भई। अज उनकी भाषा ला पोवारी भाषा कवहसेती। तसच मालवा राजपुताना का वीर सैनिक इतन एक जातीय स्वरूप मा आपरी पयचान अना संस्कृतिला भी साबुत राखिन।

पंवार राजा भोज को जमाना मा भी यव क्षेत्र उनको राज्य को हिस्सा होतो। उनको भतीजा राजा लक्ष्मणदेव पंवार खुद इतन प्रभु श्रीराम की नगरी नगरधन(रामटेक) मा आयखन विदर्भ को राज्यपाठ संभाली होतिन। तसच उनको भाई राजा जगदेव पंवार अना उनको बेटा राजा जगदेव पंवार द्वीतीय भी विदर्भ मा आयखन राज करी होतिन। उनको बाद मा यन क्षेत्र मा उनका वंशज अना नातेदार इतन आवता जावता रवहत होता। येको साती या क्षेत्र मालवा राजपुताना का राजपूत इनको लाई नवीन नही होतो। देवघर की चौरी की माटी मा उनको पुरखा ओढ़ील अना देबी देवता को को वास होतो येको साती उनको आशीर्वाद लक माय वैनगंगा की माटी मा उनना खूब तरक्की करीन।

यव खुशी की बात होती की छत्तीस कुरया क्षत्रिय इनको अधिकांश कुर का लोख यन क्षेत्र मा आय गया होता त उनना आपरो सामुदायिक स्वरूप अना संस्कृति ला मिटन नही देइन अना छत्तीस कुरया मा च जेतरा भी कुर इतन बस्या होता उनमा च बिह्या करखन आपरो जातीय स्वरूप ला कायम राखिन। यव

सैन्य जत्था मालवा को पोवार राजा इनको वंशज अना नातेदार होतिन त उनना संगठित होयखन आपरो आराध्य प्रभु श्रीराम को आशीर्वाद लकऽ यन नवो क्षेत्र ला स्वीकार करखन येको विकास मा कोनी भी कसर नही सोडिन। अज यव राजपूत क्षत्रिय समुदाय इतन येक जातीय रूप मा निवास कर रह्या सेती अना प्रभु श्रीराम की किरपा लकऽ खूब तरक्की कर रह्या सेत।

****

अवन्ति(उज्जैन) राज्य के पोवार(पंवार) समाज का परिचय और उनके मध्यभारत में आगमन तथा उनके संगठनों का इतिहास

प्राचीन काल में अवन्ति राज्य एक बहुत ही शक्तिशाली महाजनपद था जिसकी राजधानी उज्जैन थी। राजा गंधर्वसेन के पुत्र राजा भरथरी और उनके बाद उनके भाई सम्राट विक्रम विक्रमादित्य ने अवन्ति राज्य का शासन संभालकर भारतवर्ष के बहुत बड़े भूभाग पर शासन कर सनातन धर्म और संस्कृति का परचम सम्पूर्ण विश्व में फैला दिया था। महाकाल की नगरी उज्जैन सनातनी संस्कृति का मुख्य केंद्र थी और हजारों वर्षों तक अनेक कुलों के राजाओं ने यहां से प्रजाभिमुख श्रेष्ठ शासन दिया। इन क्षत्रिय राजाओं को राजपुत्र और बाद में राजपूत कहा जाने लगा। दसवीं सदी तक क्षत्रियों को "छत्तीस कुल" के होने का लिखा जाने लगा था। बाद में इन क्षत्रियों की अनेक शाखाएं हो गई और अवंति राज्य बाद में मालवा, राजपुताना आदि क्षेत्रों में बट गया था।

उज्जैन पर बाद में प्रमार कुल का मुख्य रूप से शासन रहा जिसमें राजा उपेंद्र, राजा सियाक, राजा मुंज, राजा भोज, राजा उदियादित्य आदि प्रमुख रूप से ऐतिहासिक दस्तावेजो में दर्ज हैं और पुष्टि भी करते हैं। राजा भोज के समय उज्जैन की जगह धार मालवा की राजधानी बन गई थी। प्रमार कुल और उनके नातेदार कुलों के द्वारा ही मालवा पर राजकीय और सैन्य कार्य किया जाता था, जो कालांतर में एक जातीय समूह के रूप में विकसित हुआ। जिनका चन्दरदाई कृत पृथ्वीराज रासो में छत्तीस कुल क्षत्रिय समूह के रूप में भी उल्लेख है और प्रमार उसमें से एक कुल है। मालवा में यही छत्तीस क्षत्रियों का समूह पोवार या पंवार जाति के रूप में विकसित हुआ। ये सभी प्राचीन राजपुत्रों का संघ आज की राजपूत जाति का भी हिस्सा बने जिसमें इन प्राचीन छत्तीस कुलों के साथ उनसे विभाजित कुल और अन्य क्षत्रिय कुल शामिल हुये।

प्रमार राजा महलकदेव की मृत्यु के बाद धार नगर पर मुस्लिमों का आधिपत्य हो गया जिसके कारण पोवारों का मालवा पर प्रभाव कम हो गया था लेकिन उन्होंने बाद में दूसरे क्षेत्रों में जाकर राज्य भी किया और साथ में अन्य

राजाओं को युद्ध क्षेत्र में सहयोग करने के प्रमाण मिलते हैं। वें सैनिक अभियानों में दूर-दूर जाते थे पर मालवा में ही मूल रूप से बसे रहे। यही कारण है की लम्बे समय तक साथ रहने के कारण छत्तीस कुल पोवारों की आज अपनी एक भाषा और विशिष्ट संस्कृति भी अस्तित्व में है जो किसी अन्य समुदायों से भिन्न हैं। इन्होंने राजपुताना और बुंदेलखंड के नातेदार राजपूत राजाओं सहित मराठाओं के सैन्य अभियान में भी सहयोग किया था लेकिन वें अभियान के बाद अपने मूल क्षेत्र में लौट आते थे। बाद में विदर्भ के स्थानीय राजाओं को सैन्य और राजकीय सहयोग के लिये आने के बाद वें सर्वप्रथम रामटेक के पास नगरधन में और फिर धीरे-धीरे वैनगंगा की पावन भूमि में जाकर स्थाई रूप से बसते चले गये।

ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार मध्यभारत में आकर पोवारों ने नगरधन में सन १७०० के आसपास क्षत्रिय पोवार संघ बनाया था जो वास्तव में मालवा के प्रमार राजाओं के वंशजों और उनके नातेदार क्षत्रियों या राजपूतों का एक सैन्य समूह था। ये वही छत्तीस कुल क्षत्रियों के वंशज थे जिनका उल्लेख पृथ्वीराज रासो में उल्लेख हुआ हैं। हालांकि समय के साथ कुलों के नामों में कुछ बदलाव भी हुये लेकिन इन्होंने खुद के छत्तीस कुल के संघ होने की अपनी पहचान को आज तक बचाये रखा है जो कि बहुत महत्वपूर्ण है। पोवारों ने वैनगंगा क्षेत्र में बसने के पूर्व ही विदर्भ की प्राचीन राजधानी नगरधन में अपनी पुरातन परम्पराओं और नये क्षेत्र के अनुरूप सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने का सृजन किया। स्व.लखाराम तुरकर जी द्वारा सन १८९० में लिखी किताब, "पँवार धर्मोपदेश" में पोवार समाज के इतिहास और संस्कृति पर बहुत कुछ लिखा गया हैं। इस पुस्तक में उन्होंने तात्कालिक पंवार समाज से आव्हान किया की समाज के छत्तीस कुल में शामिल हर एक कुल एक पवित्र धाम की तरह हैं और हमें अपनी छत्तीस कुल की पहचान को हर हाल में बचाये रखना हैं। उन्होंने समाज के सभी छत्तीस कुलों के नाम दिए हैं, हालांकि वैनगंगा क्षेत्र में वर्तमान में इकतीस कुलों की ही स्थाई बसाहट मिलती है। सभवतया: वें युद्ध के बाद नगरधन से वैनगंगा क्षेत्र में न आकर अपने मूल क्षेत्र में वापस चले गए हों। 1876 की जातीय गणना में केंद्रीय प्रान्त में पोवारों के तीस कुलों के स्थाई बसाहट/निवास का उल्लेख मिलता हैं जबकि 1916 की रसेल की पुस्तक में नागपुर पंवारों के विषय में लिखा हैं की इनके छत्तीस कुल हैं और ये

आपस में ही विवाह करते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें यह भी तथ्य उल्लेखित है की पंवार समाज की कोई भी शाखा नही हैं। इसका अर्थ हैं की मालवा के छत्तीस कुल पंवारों यानि इन पुरातन क्षत्रियों ने अपने समुदाय की पहचान और परम्पराओं को सदैव ही बनाये रखा हैं।

इसीलिए पोवार या पंवार समाज सदैव ही अपने आप में एक सम्पूर्ण समाज हैं और अपने छत्तीस कुलों के साथ सैकड़ों वर्षों से एक अलग ही वैभवशाली समुदाय के रूप में अपनी पहचान को साबुत रखा है। इसे पंवारों की वैनगंगा शाखा नही कह सकते क्योंकि यही मूल पंवार समाज हैं जो वैनगंगा क्षेत्र में आकर बसा था। हालांकि मालवा-राजपुताना में इनके मूल कुल अब राजपूत संघ का हिस्सा हैं पर इस क्षेत्र में स्थाई रूप से बस जाने के कारण पोवार, सामाजिक-सांस्कृतिक रुप से उनसे काफी दूर हो चुके हैं और इस प्रकार एक अलग जातीय स्वरूप में जीवन व्यापन कर रहे हैं।

पंवार समाज में आधुनिक संगठनों के निर्माण का इतिहास सन १९०० के आसपास से मिलता है। स्व लखाराम जी तुरकर जी द्वारा लिखित "पँवार धर्मोपदेश" पुस्तक से स्वजातीय बन्धुओं को संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा मिली थी। छत्तीस कुल पोवार संघ के द्वारा समाज में बढ़ रही कुरूतियों को दूर कर ऐतिहासिक संस्कृति के रक्षण हेतु सन १९०० के आसपास "पंवार जाति सुधारणी सभा" का गठन किया गया था। इस संस्था के द्वारा समाज के ब्रह्मक्षत्रिय स्वरूप को पुनर्स्थापित करने के लिए समाज में बढ़ रहे मांसाहार और मदिरापान पर प्रतिबंध लगाने के लिए आर्थिक और सामाजिक दंड का विधान किया गया था। समाज के आदर्श, अवन्ति सम्राट विक्रम के द्वारा प्रभु श्रीराम को अपने पूर्वज और आदर्श माने जाने की परम्परा का निर्वहन करते हुए सर्वप्रथम मराठा राजाओं के सहयोग से रामटेक में भव्य राममंदिर का निर्माण किया गया। इसी प्रकार पंवारो के द्वारा नागपुर के भोसले शासको के सहयोग से बालाघाट जिले के रामपायली किले पर राममन्दिर का निर्माण करवाया गया था। इसी क्रम में हमारे पुरखों के द्वारा बालाघाट जिले के बैहर नगर की सिहारपाठ पहाड़ी पर १९११ में राममंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ।

पोवार समाज संघ की "पंवार जाति सुधारणी सभा" और "पंवार राम मंदिर समिती" ने मिलकर समाज की पहचान और संस्कृति को बचाने के लिये भविष्य में संगठित होकर सभी क्षेत्रों में काम करने का निर्णय लिया। १९१० से १९४१ तक पोवार संघ की अलग-अलग जगहों पर निरंतर बैठके होती रही। इसी बीच समाज में धीरे-धीरे छोटे-छोटे संगठन बनने लगें थे और समाज भी देश की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष में तन-मन-धन से जुटे रहे। समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये पोवार संघ के द्वारा सन १९२७ में "पंवार शिक्षा समिती" का गठन किया गया। इस समिती के द्वारा महिलाओं की आधुनिक शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिये विशेष प्रयास किये गये।

इस समय सभी पोवार बहुल क्षेत्र केंद्रीय प्रान्त में आते थे और नागपुर इसकी राजधानी थी। नागपुर में समाज के युवाओं को जोड़ने के लिये सन १९३१ में, "नूतन पंवार संघ" की स्थापना हुई। इस संघ द्वारा समाज के छात्रों को जोड़कर उन्हें समाजोत्थान के लिये जोड़ने का कार्य किया गया। इसी क्रम में २०२१ को "क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाजोत्थान संघ" के नाम से पंजीयकृत कर "नूतन पंवार संघ" को फिर से जीवित किया गया। नूतन पंवार संघ ने एक सामाजिक पत्रिका भी निकालना शुरू किया था जो पोवार समाज की प्रथम सामाजिक पत्रिका थी। सन १९४१ में "मध्यप्रदेश एवं बेरार क्षत्रिय पंवार संघ" नाम से पोवार संघ को पुनर्गठित किया गया ताकी सभी क्षेत्रों में समाज को सांस्कृतिक रूप से संगठित रखा जा सके। इस पोवार महासंघ ने पंवार जाति सुधारणी सभा के कार्य अपने हाथ में ले लिये और समाज की संस्कृति को संरक्षित कर 36 कुल पोवार समाज के समाजोत्थान हेतु पुनः अधिवेशन ले कर समाज को संघठित किया। सन १७०० से लेकर देश की स्वतंत्रता तक लगभग २५० वर्षों तक छत्तीस कुल पंवारों के संघ ने मालवा के राजपूतों की पहचान और अस्मिता के प्राचीन छत्तीस कुलीन स्वरूप को कायम रखा। आजादी के तुरंत बाद क्षत्रिय पंवार संघ ने गोंदिया में पोवार बोर्डिंग (छात्रावास) का निर्माण किया।

स्वतंत्रता के बाद पोवारों का रोजगार के लिये देश-विदेश में जाना शुरू हुआ। समय के साथ देश के अनेक शहरों में जाकर समाजजन बसने लगें। समाज

में जनजागृती के साथ ही कई नये-नये सामाजिक संगठन बनने लगें। गोंदिया, नागपुर, भिलाई, रायपुर, जबलपुर, बालाघाट, सिवनी, भोपाल, इंदौर सहित तहसील और स्थानीय स्तर पर अनेक संगठन और समितियों का निर्माण शुरू हुआ और पोवार समाज के आज लगभग १२५ के आसपास संगठन और समितियां बन चुकी हैं जो विभिन्न स्तर पर समाज के हित में कार्य कर रहे हैं।

छत्तीस कुल पोवारों की सबसे बड़ी संस्था "मध्यप्रदेश एवं बेरार क्षत्रिय पंवार संघ" आज "अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार(पोवार) महासंघ" के रूप में कार्य कर रही है। १९६१ में अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा भी अस्तित्व में आई थी लेकिन इस संस्था द्वारा पोवारों के साथ कई जातियों और जनजातियों को जोड़कर मिश्रित समाज निर्माण की नीति के कारण छत्तीस कुल पोवारों के स्वतंत्र अस्तित्व और पहचान पर संकट उत्पन्न हो गया था। हालांकि सन २००६ में अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा के समाप्त होते ही उसके पोवारों के साथ अन्य जातियों के विलीनिकरण और पुरातन नामों को बदलने के प्रस्ताव अस्तित्व में नही रहे थे। पोवार महासंघ के तुमसर अधिवेशन में प्रस्ताव पास कर पोवारों के स्वतंत्र अस्तित्व और पहचान को हर हाल में बचाये रखने का संकल्प लिया गया जिससे पोवारों के साथ अन्य जातियों के आपस में विलीनीकरण के सभी प्रयास ख़ारिज हो गये।

अठाहरवीं सदी की शुरुवात में सन १७०० के आसपास नगरधन(वैनगंगा जिला) में बना छत्तीस कुल क्षत्रिय पोवार संघ आज भी अपने समाज के उत्थान और गौरवशाली इतिहास तथा संस्कृति को कायम रखते हुये "अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ" के रूप में निरंतर कार्य कर रहा है। यह संगठन अपनी प्राचीन सनातनी पोवारी संस्कृति को कायम रखते हुये सभी जातियों के साथ एकीकृत होकर अपने सनातन धर्म और संस्कृति के रक्षण के साथ भारतवर्ष की एकता और अखंडता को कायम रखे हुये है। छत्तिस कुल समाज राष्ट्र उत्थान में निरंतर सहयोग करने की अपनी नीति पर कार्य कर रहा है। सैकड़ो वर्षों से पोवारों के छत्तीस कुलीन अस्तित्व और सांस्कृतिक स्वरूप को यथावत रखने और साथ में भाषा संस्कृति को संरक्षित कर समाजोत्थान करने के पुरातन संकल्प के

अनुरुप ही सामाजिक संगठनों को कार्य करने चाहिए। छत्तीस कुल पोवार(पंवार) समाज सदियों से मूल समाज रहा है और मध्यभारत में आने के बाद भी उन्होंने अपने प्राचीन स्वरूप और अस्तित्व को ही बचाये रखा है और उसे ही हर हाल में बचाकर रखना अपने पूर्वजों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

संदर्भ ग्रंथ (Bibliography)

१. "पँवार धर्मोपदेश" -श्री लखाराम जी तुरकर, १८९०

२. भोजपत्र, अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महसभा(१९८६)

३. पंवार गाथा- श्री जयपाल सिंह जी पटले(२००६)

४. पोवार - श्री महेन पटले(२०२२)

५. पोवारों का इतिहास (History of Powar Community) 1658-2022 A.D. - प्राचार्य ओ.सी. पटले (२०२3)

६. Report on the Territories of the Raja of Nagpur 1816 supplement 1827- Jenkins Recherd.

७. Hindu Tribes and Castes - Matthu Atmore Sherring, 1872.

८. The Tribes and Castes of the Central Provinces of India, 1916 – R. V. Russel and Hiralal.

९. Ethnological Report Nagpur-1868

लेखक : ऋषि बिसेन,

B.E. (Met. Eng.), M.A.(History)

ग्राम-खामघाट(बालाघाट)

द्वारा

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ